बी.एच.आई.सी.-110: भारत का इतिहास : 1757-1857

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: **BHIC-110**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एच.आई.सी -110 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-2027**
अधिकतम अंक: **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य - I

निम्नलिखित वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) कृषि के वाणिज्यीकरण का क्या प्रभाव पड़ा? चर्चा कीजिए। 20

2) प्राच्यवादियों व उपयोगितावादियों के बीच अंतरों पर चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य - II

निम्नलिखित मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) क्या रैयतबाड़ी बंदोबस्त अपने उद्देश्यों में सफल रहा? चर्चा कीजिए। 10

4) विऔद्योगीकरण क्या है? औपनिवेशिक सन्दर्भ में टिप्पणी कीजिए। 10

5) 1857 की क्रांति के क्या कारक थे? चर्चा कीजिए। 10

सत्रीय कार्य - III

निम्नलिखित लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) उपन्यास का उदय 6

7) महालवाड़ी बंदोबस्त 6

8) हाली प्रथा 6

9) 19वीं सदी में शहर और ग्रामक्षेत्र 6

10) अनुबंधित श्रम की शुरूआत 6

1) कृषि के वाणिज्यीकरण का क्या प्रभाव पड़ा? चर्चा कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

प्रस्तावना

कृषि का वाणिज्यीकरण उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें किसान अपनी फसल मुख्यतः परिवार के उपभोग या स्थानीय जरूरतों के लिए नहीं, बल्कि बाजार में बेचने और नकद आय प्राप्त करने के उद्देश्य से उगाता है। भारत में बाजार के लिए उत्पादन औपनिवेशिक शासन से पहले भी मौजूद था, किंतु अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं शताब्दी में भूमि-राजस्व, यूरोपीय व्यापार, परिवहन तथा विश्व बाजार के विस्तार ने उसका स्वरूप बदल दिया। इस प्रक्रिया से कुछ क्षेत्रों और उत्पादकों को अवसर मिले, पर अधिकांश किसानों पर बाजार तथा औपनिवेशिक सत्ता के जोखिम भी बढ़े।

वाणिज्यीकरण के प्रमुख कारण

ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके बाद ब्रिटिश शासन को नियमित नकद भूमि-राजस्व चाहिए था। किसान को लगान चुकाने के लिए अनाज बेचकर नकदी जुटानी पड़ती थी। ब्रिटेन के उद्योगों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार की माँग ने भारतीय कपास, नील, अफीम, जूट, चाय तथा अन्य कृषि उत्पादों को बड़े बाजारों से जोड़ दिया। रेलवे, सड़कों, बंदरगाहों और व्यापारिक एजेंसियों ने दूरस्थ क्षेत्रों से वस्तुओं का आवागमन आसान किया। साहूकारों, व्यापारियों और अग्रिम देने वाले ठेकेदारों ने खेती के निर्णयों में अधिक दखल देना शुरू किया। इस प्रकार आर्थिक अवसर और औपनिवेशिक दबाव, दोनों मिलकर वाणिज्यीकरण का आधार बने।

नकदी फसलों और क्षेत्रीय विशेषज्ञता का विस्तार

बंगाल में जूट और नील, पश्चिमी भारत में कपास, बिहार तथा संयुक्त प्रांत के कुछ हिस्सों में नील और अफीम तथा असम में चाय जैसी फसलों का विकास हुआ। इनका महत्व यूरोपीय उद्योग, निर्यात और व्यापारिक हितों से जुड़ा था। कुछ किसानों को अच्छे दाम मिलने पर नकद आय हुई; मंडियों और बिचौलिया नेटवर्क के विकास से कृषि का क्षेत्रीय विभाजन बढ़ा। तथापि किसान हमेशा स्वतंत्र रूप से फसल नहीं चुन पाता था। नील की खेती में अनेक स्थानों पर अग्रिम, अनुबंध और बलपूर्वक दबाव ने उत्पादन को शोषणकारी बनाया। इसलिए व्यापारिक विस्तार को सभी किसानों की समृद्धि के समान नहीं समझना चाहिए।

खाद्य सुरक्षा पर असर

जहाँ नकदी फसलों का क्षेत्र बढ़ा, वहाँ कुछ परिस्थितियों में खाद्यान्न उत्पादन के लिए उपलब्ध भूमि और श्रम प्रभावित हुए। स्थानीय अनाज के भंडारण एवं वितरण पर बाजार मूल्य का प्रभाव बढ़ गया। सूखा, खराब फसल या युद्धकालीन माँग की स्थिति में जिन किसानों की आय एक-दो नकदी फसलों पर निर्भर थी, वे अधिक असुरक्षित हो सकते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अकालों को केवल वाणिज्यीकरण का परिणाम मानना गलत होगा; मौसम, औपनिवेशिक नीतियों, परिवहन व्यवस्था, वितरण, क्रयशक्ति और राहत-प्रशासन का भी योगदान था। फिर भी बाजार के लिए खेती ने कई क्षेत्रों में जीवननिर्वाह की पुरानी सुरक्षा को कमजोर किया।